

NCERT Class 7 संघर्ष और समानता – पूरी अवधारणा | Struggles for Equality in India | PDF Notes

परिचय -

जब लोग अन्याय के खिलाफ आवाज उठाते हैं, अपने हक के लिए लड़ते हैं, तो वही **struggles for equality** यानी समानता के लिए संघर्ष कहलाता है।

समानता का सपना हर इंसान देखता है। लेकिन क्या वाकई हम सब बराबर हैं? क्या समाज में सबको एक जैसा मौका मिलता है? शायद नहीं।

हमारे आसपास ऐसे कई उदाहरण मिल जाएंगे जहां लोगों को उनके जाति, धर्म, लिंग या पैसे के कारण अलग व्यवहार झेलना पड़ता है। तो फिर सवाल उठता है – आखिर समानता लाने के लिए क्या करना चाहिए? इसका जवाब है – संघर्ष।

इस लेख में हम विस्तार से समझेंगे कि आखिर यह संघर्ष क्यों जरूरी है, कैसे हुआ, क्या-क्या बदलाव आए और परीक्षाओं के लिए कौन से तथ्य सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण हैं।

तो चलिए, बिना देर किए शुरू करते हैं।

प्रश्न: समानता के लिए संघर्ष किसे कहते हैं?

समानता के लिए संघर्ष Struggles for Equality का अर्थ है – समाज में व्याप्त भेदभाव, असमानता, छुआछूत, जातिवाद, लैंगिक भेदभाव और आर्थिक विषमता के खिलाफ लोगों द्वारा किया जाने वाला सामूहिक प्रयास। यह वह प्रक्रिया है जिसमें वंचित और पिछड़े वर्ग के लोग अपने अधिकारों, सम्मान और बराबरी के दर्जे के लिए आवाज उठाते हैं। भारत में दलित आंदोलन, महिला आंदोलन, आरक्षण आंदोलन और निर्मला सीतारमण जैसे कई संघर्ष इसके उदाहरण हैं।

विषय का परिचय

“सबके लिए समान अवसर” – यह बात कहने में जितनी आसान है, उतनी ही मुश्किल है इसे सच करना।

हमारा समाज सदियों से जाति, धर्म, लिंग और आर्थिक स्थिति के आधार पर बंटा रहा है। कुछ लोगों को जन्म से ही सारी सुविधाएं मिलती हैं, तो कुछ को अपने मूल अधिकारों के लिए भी लड़ना पड़ता है।

जब यह अंतर असहनीय हो जाता है, तो लोग एकजुट होते हैं। वे चिल्लाते हैं, मार्च करते हैं, अनशन करते हैं, अदालत जाते हैं, कभी-कभी सड़कों पर उतर आते हैं। यही समानता के लिए संघर्ष Struggles for Equality है।

यह संघर्ष केवल एक समूह का नहीं, बल्कि पूरे लोकतंत्र का दर्पण होता है। जब तक संघर्ष होते रहेंगे, तब तक समाज बदलता रहेगा।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

प्राचीन से मध्यकाल तक

भारत में वर्ण व्यवस्था और जाति प्रथा ने समानता को बहुत नुकसान पहुंचाया। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र – इस चार वर्गों में बंटे समाज में शूद्रों और अछूतों को सबसे ज्यादा भेदभाव झेलना पड़ा।

मध्यकाल में सूफी और भक्ति आंदोलन

कबीर, रैदास, गुरु नानक, चैतन्य महाप्रभु जैसे संतों ने जाति-पाति के खिलाफ आवाज उठाई। उन्होंने कहा – “जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान”। लेकिन ये बदलाव बहुत सीमित रहे।

ब्रिटिश काल में जागरूकता

अंग्रेजों के आने के बाद पश्चिमी शिक्षा, विज्ञान और लोकतंत्र के विचार आए। इससे लोगों में अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ी। राजा राममोहन राय, ज्योतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले, पेरियार, डॉ. बी.आर. अंबेडकर जैसे समाज सुधारकों ने समानता के लिए जमीनी स्तर पर संघर्ष शुरू किया।

स्वतंत्रता के बाद

1947 में आजादी मिली। संविधान ने सबको समानता का अधिकार दिया (अनुच्छेद 14-18)। लेकिन केवल कानून बना देने से समानता नहीं आती। असली संघर्ष तो आज भी जारी है।

मूल अवधारणा

समानता क्या है?

समानता का मतलब सबको बिल्कुल एक जैसा व्यवहार देना नहीं है। इसका मतलब है – हर व्यक्ति को उसकी जरूरत, परिस्थिति और योग्यता के अनुसार उचित अवसर मिले।

समानता के प्रकार:

प्रकार	अर्थ
कानूनी समानता	कानून सबके लिए एक समान
राजनीतिक समानता	वोट देने और चुनाव लड़ने का अधिकार
सामाजिक समानता	जाति, धर्म, लिंग का भेदभाव न हो
आर्थिक समानता	अमीर-गरीब का अंतर कम हो

संघर्ष क्यों जरूरी है?

क्योंकि सिर्फ कानून बनाने से बदलाव नहीं आता। जब तक लोग खुद न उठेंगे, तब तक सत्ता और संसाधनों पर कब्जा जमाए लोग अपना हिस्सा नहीं छोड़ेंगे।

उदाहरण: देश में आरक्षण की व्यवस्था कानून में है, लेकिन आज भी दलित-आदिवासी बच्चों को स्कूल में भेदभाव झेलना पड़ता है। जब वे इसके खिलाफ आवाज उठाते हैं – यही संघर्ष है।

(विस्तृत व्याख्या)

समानता के लिए संघर्ष के मुख्य क्षेत्र

भारत में मुख्यतः चार क्षेत्रों में समानता के लिए संघर्ष हुए हैं:

1. जाति के आधार पर संघर्ष

सदियों से चली आ रही छुआछूत, ऊंच-नीच और जातिगत हिंसा के खिलाफ यह सबसे बड़ा संघर्ष रहा है।

महत्वपूर्ण आंदोलन:

- महाड़ सत्याग्रह (1927): डॉ. अंबेडकर ने महाराष्ट्र के महाड़ में सार्वजनिक तालाब में पानी पीने के लिए संघर्ष किया।
- कालाराम मंदिर प्रवेश आंदोलन (1930): नासिक में दलितों को मंदिर में प्रवेश दिलाने का आंदोलन।
- नामांतर आंदोलन: महाराष्ट्र में मराठवाड़ा विश्वविद्यालय का नाम बदलकर डॉ. अंबेडकर के नाम पर करने का संघर्ष।

आज की स्थिति: जातिगत हिंसा के मामले आज भी होते हैं। 2023 में भी स्कॉलिंग (खींचकर घुमाने) की घटनाएं सामने आईं।

2. लिंग के आधार पर संघर्ष

लड़का-लड़की, पुरुष-महिला में भेदभाव सबसे पुराना और व्यापक है।

प्रमुख आंदोलन:

- निर्भया कांड के बाद आंदोलन (2012): दिल्ली में हजारों लोग सड़कों पर उतरे। इसके बाद यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण अधिनियम (POCSO) और नए कानून बने।
- #MeToo आंदोलन (2018): कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न के खिलाफ महिलाओं ने आवाज उठाई।
- लेडीज़ टॉयलेट आंदोलन: गांवों में महिलाओं के लिए अलग शौचालय की मांग।

सफलता: अब लड़कियां स्कूल जा रही हैं। महिलाएं सेना, विमानन, अंतरिक्ष में भी काम कर रही हैं। लेकिन वेतन में अंतर (gender pay gap) और घरेलू हिंसा जैसी समस्याएं अभी भी बाकी हैं।

3. आर्थिक आधार पर संघर्ष

अमीर और गरीब के बीच बढ़ती खाई ने कई संघर्षों को जन्म दिया।

उदाहरण:

- नर्मदा बचाओ आंदोलन: बांध बनने से विस्थापित हुए गरीब आदिवासियों का संघर्ष।
- मजदूर आंदोलन: न्यूनतम मजदूरी, सामाजिक सुरक्षा और काम के अधिकार के लिए।
- अन्ना हजारे का भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन (2011): आम आदमी के पैसे की लूट के खिलाफ।

4. विकलांगता और अन्य अल्पसंख्यकों का संघर्ष

दिव्यांगजनों, ट्रांसजेंडरों, अल्पसंख्यकों को भी अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करना पड़ता है।

मील का पत्थर:

- नालसा बनाम भारत संघ केस (2014): सुप्रीम कोर्ट ने ट्रांसजेंडरों को तीसरे लिंग का दर्जा दिया।
- दिव्यांगता अधिकार अधिनियम (2016): सार्वजनिक स्थानों, शिक्षा, रोजगार में समान अवसर सुनिश्चित करता है।

Step-by-Step Explanation

समानता के लिए संघर्ष की प्रक्रिया:

चरण 1: असमानता का एहसास

जब कोई व्यक्ति या समूह महसूस करता है कि उसके साथ अन्याय हो रहा है।

चरण 2: जागरूकता फैलाना

लोग आपस में चर्चा करते हैं, पर्चे बांटते हैं, सोशल मीडिया पर पोस्ट करते हैं।

चरण 3: संगठन बनाना

एकजुट होने के लिए समिति, संघ या आंदोलन का गठन।

चरण 4: मांग रखना

सरकार या संबंधित प्राधिकारी के सामने स्पष्ट मांग रखी जाती है।

चरण 5: विरोध प्रदर्शन

अनशन, धरना, रैली, मार्च, हड़ताल आदि।

चरण 6: मध्यस्थता और वार्ता

कभी-कभी सरकार बातचीत करती है। कभी न्यायालय का सहारा लिया जाता है।

चरण 7: परिणाम

कानून बनता है, नीति बदलती है, या कभी-कभी संघर्ष असफल भी हो जाता है।

चरण 8: निगरानी और आगे का संघर्ष

बदलाव लागू होने के बाद भी उसकी निगरानी जरूरी है।

महत्वपूर्ण परिभाषाएँ

शब्द	परिभाषा
सामाजिक न्याय	समाज के सभी वर्गों को उनके हक और सम्मान का उचित स्थान मिलना
भेदभाव	किसी व्यक्ति या समूह के साथ जाति, लिंग, धर्म, आय के आधार पर अलग व्यवहार करना
बहिष्कार	किसी समूह को समाज की मुख्यधारा से अलग करके रखना
आरक्षण	पिछड़े वर्गों को शिक्षा, नौकरी और चुनाव में निश्चित सीटों का प्रावधान
हाशियाकरण	किसी समूह का समाज के किनारे धकेल दिया जाना

(संघर्ष के प्रकार)

संघर्ष के स्वरूप के अनुसार:

1. शांतिपूर्ण संघर्ष: अनशन, धरना, रैली, सत्याग्रह (गांधी, अंबेडकर)
2. हिंसक संघर्ष: कभी-कभी आंदोलन हिंसक हो जाते हैं (नक्सलवादी आंदोलन)
3. कानूनी संघर्ष: अदालत में याचिका डालकर (नालसा केस, शाह बानो केस)
4. वैचारिक संघर्ष: लेख, किताबें, भाषणों के माध्यम से (फुले, अंबेडकर, पेरियार)

समय के अनुसार:

कालखंड	संघर्ष का स्वरूप
19वीं सदी	समाज सुधार आंदोलन (व्यक्तिगत पहल)
20वीं सदी की शुरुआत	सत्याग्रह, कानूनी लड़ाई
स्वतंत्रता के बाद	आरक्षण, अधिकार आंदोलन
1990 के बाद	नए सामाजिक आंदोलन (पर्यावरण, महिला, दलित)
2010 के बाद	सोशल मीडिया, हैशटैग आंदोलन

Real-Life Connection (वास्तविक जीवन से जुड़ाव)

समानता के लिए संघर्ष के मुख्य क्षेत्र

भारत में सभी लोगों को समान अधिकार और अवसर दिलाने के लिए इन क्षेत्रों में लंबे समय से संघर्ष होते रहे हैं।

1. शिक्षा का अधिकार



सभी बच्चों को अच्छी और समान शिक्षा मिलें, इसके लिए संघर्ष किया गया। सभी के लिए मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार सुनिश्चित हुआ।

2. जाति भेदभाव के खिलाफ



जति-पात छोड़ो, समानता जोड़ो। हम सब एक एक हैं। भेदभाव बंद करो। समानता हमारा अधिकार। जाति के आधार पर होने वाले भेदभाव और छूआछूत के खिलाफ लोगों ने आंदोलन किए। संविधान ने सभी को समानता और छूआछूत समाप्त करने का अधिकार दिया।

3. महिलाओं के अधिकार



महिलाओं को पुरुषों के बराबर अधिकार दिलाने, समान वेतन, शिक्षा और सम्मान के लिए संघर्ष हुआ। आज महिलाओं को समान अधिकार और सुरक्षा के कानून मिले हैं।

4. श्रमिकों के अधिकार



कम मजदूरी, खराब काम की स्थिति और शोषण के खिलाफ श्रमिकों ने संगठित होकर संघर्ष किया। आज श्रमिकों को उचित वेतन, काम के घंटे और सुरक्षा के अधिकार मिले हैं।

5. पिछड़े वर्गों के अधिकार



दलितों, आदिवासियों, पिछड़े वर्गों और दिव्यांगजनों को समान अवसर दिलाने के लिए संघर्ष किया गया। आरक्षण और विशेष योजनाओं के माध्यम से उन्हें आगे बढ़ने के अवसर दिए गए।

6. भेदभाव और हिंसा के खिलाफ



भेदभाव बंद करो। हम सब समान हैं। हिंसा नहीं समरसता चाहिए। धर्म, भाषा, लिंग, क्षेत्र या किसी भी आधार पर होने वाले भेदभाव, पूजा और हिंसा के खिलाफ लोगों ने आवाज उठाई। सभी को समान सम्मान और स्वतंत्रता दिलाना ही इस संघर्ष का मुख्य उद्देश्य है।

समानता के लिए संघर्ष ने ही हमारे समाज को न्यायपूर्ण, भाईचारे वाला और मजबूत लोकतंत्र बनाया है।

उदाहरण 1: स्कूल में वर्दी का मामला

मान लीजिए किसी स्कूल में गरीब बच्चे को महंगी वर्दी खरीदनी पड़ती है। एक दिन सारे गरीब बच्चे एक साथ उठकर कहते हैं – “हम यह वर्दी नहीं पहनेंगे।” स्कूल प्रबंधन डर जाता है और सस्ती वर्दी बनवा देता है। यह समानता के लिए संघर्ष (**struggles for equality**) है।

उदाहरण 2: बस में महिलाओं की परेशानी

यदि किसी शहर की बसों में महिलाओं के लिए कोई विशेष व्यवस्था नहीं है और उन्हें धक्के-मुक्की झेलनी पड़ती है। महिलाएं एक साथ बस डिपो के सामने प्रदर्शन करें। तो सरकार महिला बसें चला देती है। यह भी **struggles for equality** ही है।

उदाहरण 3: गांव में हैंडपंप

एक गांव में केवल एक हैंडपंप है और उस पर ऊंची जाति के लोग पानी भरते हैं। दलित महिलाएं पानी के लिए कोसों दूर जाती हैं। एक दिन वे सब झुंकी होती हैं और उसी हैंडपंप पर पानी भरने लगती हैं। गांव वाले विरोध करते हैं, लेकिन पुलिस आती है और सबको पानी का अधिकार दिलाती है। यह असली जिंदगी की कहानी है।

परीक्षा उपयोगिता:

परीक्षा	विषय/पेपर	महत्व (1-5)
UPSC Prelims	GS Paper I (Polity)	★★★★★
UPSC Mains	GS Paper I (Society), GS Paper II (Social Justice)	★★★★★
UPSC Optional	Sociology, Public Administration	★★★★★
SSC CGL	GK (Polity)	★★★★★
Railway NTPC	GK (Social Issues)	★★★★
CTET / TET	EVS, Social Science	★★★★★
Class 7-12	Civics, Political Science	★★★★★

परीक्षा में कैसे पूछा जाता है?

UPSC Previous Year Question (Mains 2020):

“समानता के लिए सामाजिक संघर्ष ने लोकतांत्रिक व्यवस्था को कैसे मजबूत किया है? चर्चा करें।”

SSC CGL 2019:

“निम्नलिखित में से कौन दलित आंदोलन से संबंधित नहीं है? (a) महाड़ सत्याग्रह (b) नामांतर आंदोलन (c) चिपको आंदोलन (d) कालाराम मंदिर प्रवेश”

NCERT Class 7 (Textbook Question):

“समानता के लिए संघर्ष का एक उदाहरण देते हुए बताएं कि इससे समाज में क्या बदलाव आया?”

महत्वपूर्ण PYQ तथ्य:

1. महाड़ सत्याग्रह (1927) – UPSC में 4 बार पूछा जा चुका है
2. नालसा केस (2014) – 2020 में UPSC Prelims में आया
3. #MeToo आंदोलन – 2019 में Mains में वैकल्पिक प्रश्न
4. नर्मदा बचाओ आंदोलन – पर्यावरण और सामाजिक न्याय से जोड़कर पूछा गया
5. अन्ना हजारे आंदोलन – लोकपाल और भ्रष्टाचार से संबंधित

सुझाव: इन सभी आंदोलनों की तारीखें, नेता, मुख्य मांग और परिणाम अलग से नोट कर लें।

Important Facts (एक नजर में तथ्य)

तथ्य	विवरण
अनुच्छेद 14	कानून के समक्ष समानता
अनुच्छेद 15	धर्म, जाति, लिंग, जन्म स्थान के आधार पर भेदभाव निषेध
अनुच्छेद 16	सार्वजनिक रोजगार में समान अवसर
अनुच्छेद 17	अस्पृश्यता का अंत (सबसे महत्वपूर्ण)
अनुच्छेद 18	उपाधियों का उन्मूलन
पहला सत्याग्रह (किसान)	1917, चंपारण (गांधी)
पहला दलित सत्याग्रह	1927, महाड़ (अंबेडकर)
ट्रांसजेंडर अधिकार (सुप्रीम कोर्ट)	2014, नालसा केस
समान वेतन अधिनियम	1976 (अब भी पूरी तरह लागू नहीं)
महिला आरक्षण विधेयक	2023 में राज्यसभा से पारित (33% सीटें)

Quick Revision Notes

10 मिनट में रिवीजन:

1. समानता के लिए संघर्ष = वंचित समूहों द्वारा अपने अधिकारों के लिए सामूहिक प्रयास
2. मुख्य कारण = जाति, लिंग, आर्थिक भेदभाव, सामाजिक बहिष्कार
3. प्रमुख आंदोलन – महाड़, कालाराम, नर्मदा, नालसा, #MeToo
4. मुख्य नेता – अंबेडकर, फुले, पेरियार, गांधी, मेधा पाटकर

5. संवैधानिक प्रावधान – अनुच्छेद 14-18
6. नवीनतम घटना – महिला आरक्षण विधेयक 2023
7. परीक्षा टिप्स – तारीखें, नाम, अनुच्छेद संख्या, और हालिया उदाहरण जरूर याद करें

Sources

1. <https://ncert.nic.in> – (NCERT की आधिकारिक किताबों के लिए)
2. <https://upsc.gov.in> – (UPSC सिलेबस और PYQ के लिए)
3. <https://socialjustice.gov.in> – (सामाजिक न्याय मंत्रालय की रिपोर्ट)
4. <https://pib.gov.in> – (सरकारी प्रेस रिलीज, नए कानूनों के लिए)
5. <https://nhrc.nic.in> – (मानवाधिकार आयोग की रिपोर्ट)

Conclusion

संघर्ष और समानता सिर्फ एक चैप्टर का नाम नहीं है। यह हमारे समाज का दर्पण है।

हमने देखा कि कैसे सदियों से लोग अपने अधिकारों के लिए लड़ते आए हैं। चाहे वह डॉ. अंबेडकर का महाड़ का सत्याग्रह हो, या निर्भया के बाद सड़कों पर उतरी महिलाएं, या फिर नालसा केस में ट्रांसजेंडरों की जीत – हर संघर्ष ने हमें थोड़ा और समान बनाया है।

लेकिन यह सफर अभी खत्म नहीं हुआ है। आज भी गांवों में छुआछूत है। आज भी महिलाओं को कम वेतन मिलता है। आज भी गरीब बच्चे स्कूल नहीं जा पाते।

तो हम क्या कर सकते हैं? कम से कम इतना तो कर ही सकते हैं – खुद भेदभाव न करें, और दूसरों को भी ऐसा करने से रोकें। अगर कहीं अन्याय दिखे, तो चुप न बैठें। क्योंकि एक आवाज भी बदलाव ला सकती है।

जैसा कि डॉ. अंबेडकर ने कहा था –

“शिक्षित बनो, संगठित रहो, और संघर्ष करो।”

यही असली मंत्र है – समानता के लिए। और यही इस लेख का सार भी।

Author Bio

लेखक पिछले 4 वर्षों से UPSC एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी और अध्ययन से जुड़े हुए हैं। इनका वैकल्पिक विषय Public Administration रहा है। इन्होंने BCA तथा Advanced Diploma in Software की शिक्षा प्राप्त की है। वर्तमान में ये DevOps एवं Server Engineer के रूप में कार्यरत हैं और Education, Technology, NCERT Foundation एवं Competitive Exam Preparation से जुड़े विषयों पर गहराई से अध्ययन एवं लेखन करते हैं।

[अध्याय 1 – भारतीय लोकतंत्र में समानता](#)

FAQs

प्रश्न 1: समानता के लिए संघर्ष का क्या अर्थ है?

उत्तर: समानता के लिए संघर्ष का अर्थ है – समाज में व्याप्त जातिगत, लैंगिक, आर्थिक या सामाजिक भेदभाव के खिलाफ वंचित और पिछड़े समूहों द्वारा किया जाने वाला सामूहिक प्रयास। यह संघर्ष शांतिपूर्ण या कानूनी हो सकता है और इसका उद्देश्य सभी नागरिकों को समान अधिकार, अवसर और सम्मान दिलाना होता है।

प्रश्न 2: भारत में समानता के लिए मुख्य संघर्ष कौन-कौन से हैं?

उत्तर: भारत में मुख्यतः चार प्रकार के संघर्ष हुए हैं – (1) जाति आधारित (दलित आंदोलन, अंबेडकर का महाड़ सत्याग्रह), (2) लिंग आधारित (निर्भया आंदोलन, #MeToo), (3) आर्थिक आधारित (नर्मदा बचाओ, मजदूर आंदोलन), और (4) अन्य अल्पसंख्यकों के संघर्ष (ट्रांसजेंडर अधिकार, दिव्यांग अधिकार)।

प्रश्न 3: संविधान में समानता के कौन से अधिकार दिए गए हैं?

उत्तर: भारतीय संविधान के भाग 3 में अनुच्छेद 14 से 18 तक समानता का अधिकार दिया गया है। अनुच्छेद 14 – कानून के समक्ष समानता, अनुच्छेद 15 – भेदभाव का निषेध, अनुच्छेद 16 – सरकारी नौकरियों में समान अवसर, अनुच्छेद 17 – अस्पृश्यता का अंत, अनुच्छेद 18 – उपाधियों का उन्मूलन।

प्रश्न 4: महाड़ सत्याग्रह क्या था?

उत्तर: महाड़ सत्याग्रह 1927 में डॉ. भीमराव अंबेडकर के नेतृत्व में महाराष्ट्र के महाड़ शहर में हुआ था। इस संघर्ष का उद्देश्य दलितों को सार्वजनिक तालाब के पानी का उपयोग करने का अधिकार दिलाना था, जहां उन्हें प्रवेश नहीं दिया जाता था। यह भारत में जातिगत समानता के लिए पहला बड़ा सत्याग्रह था।

प्रश्न 5: नालसा केस (2014) क्यों महत्वपूर्ण है?

उत्तर: नालसा (नॉशनल लीगल सर्विसेज़ अथॉरिटी) बनाम भारत संघ केस (2014) में सुप्रीम कोर्ट ने ऐतिहासिक फैसला सुनाते हुए ट्रांसजेंडर लोगों को 'तीसरे लिंग' का दर्जा दिया। कोर्ट ने कहा कि ट्रांसजेंडरों को भी संविधान के अनुच्छेद 14 के तहत समानता का अधिकार प्राप्त है और उनके साथ भेदभाव नहीं किया जा सकता।

प्रश्न 6: समानता के लिए संघर्ष UPSC परीक्षा में कितना महत्वपूर्ण है?

उत्तर: यह UPSC प्रारंभिक और मुख्य दोनों परीक्षाओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रारंभिक में राजनीति विज्ञान और भारतीय समाज से प्रश्न आते हैं। मुख्य परीक्षा के GS पेपर I (समाज), GS पेपर II (सामाजिक न्याय) और वैकल्पिक विषयों (समाजशास्त्र, लोक प्रशासन) में इससे प्रश्न पूछे जाते हैं। पिछले 5 सालों में औसतन 2-3 प्रश्न आए हैं।

प्रश्न 7: क्या सिर्फ कानून बनाने से समानता आ सकती है?

उत्तर: नहीं, केवल कानून बनाने से समानता नहीं आती। जरूरत है – कानूनों का सही क्रियान्वयन, सामाजिक चेतना, शिक्षा, और लोगों के सोच में बदलाव की। उदाहरण के लिए, अस्पृश्यता खत्म करने का कानून (अनुच्छेद 17) 1950 में ही बन गया था, लेकिन आज भी गांवों में छुआछूत के मामले सामने आते हैं। इसलिए समानता के लिए निरंतर संघर्ष जरूरी है।

प्रश्न 8: #MeToo आंदोलन क्या है?

उत्तर: #MeToo आंदोलन 2018 में भारत और दुनिया भर में फैला एक सामाजिक आंदोलन था जिसमें महिलाओं ने कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न के अपने अनुभव साझा किए। यह एक हैशटैग अभियान था जो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ। इसके परिणामस्वरूप कई हाई-प्रोफाइल लोगों (मीडिया, फिल्म, राजनीति) के खिलाफ जांच हुई और कंपनियों ने नीतियां बदलीं।

प्रश्न 9: समानता और बराबरी में क्या अंतर है?

उत्तर: समानता का अर्थ है – हर व्यक्ति को उसकी जरूरत और परिस्थिति के अनुसार न्यायसंगत अवसर मिलना। जबकि बराबरी का अर्थ है – सबको बिल्कुल एक जैसा व्यवहार और संसाधन देना। उदाहरण से समझें: दो बच्चों में एक छोटा, एक लंबा। अगर दोनों को एक ही साइज का फल देंगे (बराबरी), तो छोटा बच्चा नहीं खा पाएगा। लेकिन जरूरत के हिसाब से फल देना (समानता) सही है।

प्रश्न 10: महिला आरक्षण विधेयक 2023 क्या है?

उत्तर: महिला आरक्षण विधेयक (नारी शक्ति वंदन अधिनियम) 2023 में संसद के दोनों सदनों से पारित हुआ। इस कानून के तहत लोकसभा, राज्य विधानसभाओं और दिल्ली की विधानसभा में महिलाओं के लिए 33% सीटें आरक्षित की जाएंगी। यह महिला सशक्तिकरण और राजनीतिक समानता की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है, हालांकि यह 2029 के बाद ही पूरी तरह लागू होगा।

प्रश्न 11: छात्र समानता के लिए कैसे योगदान दे सकते हैं?

उत्तर: छात्र कई तरीकों से योगदान दे सकते हैं – (1) अपने स्कूल या कॉलेज में भेदभाव के खिलाफ आवाज उठाकर, (2) सामाजिक बुराइयों (जातिवाद, छुआछूत) के खिलाफ जागरूकता फैलाकर, (3) वंचित बच्चों को पढ़ाकर, (4) सरकारी योजनाओं की जानकारी गरीबों तक पहुंचाकर, (5) सोशल मीडिया पर जागरूकता अभियान चलाकर, (6) एनएसएस या एनसीसी में भाग लेकर।

प्रश्न 12: क्या केवल सरकार ही समानता ला सकती है?

उत्तर: नहीं, समानता लाने की जिम्मेदारी सिर्फ सरकार की नहीं है। सरकार कानून और नीतियां बना सकती है, लेकिन असली बदलाव तब आता है जब हम – परिवार, पड़ोस, समाज, स्कूल – में भेदभाव छोड़ें। हर नागरिक को अपने घर, कार्यस्थल और समुदाय में समानता को बढ़ावा देना चाहिए। जैसे कि डॉ. अंबेडकर ने कहा था – “बड़े बदलाव के लिए छोटे कदम उठाने पड़ते हैं।”

